उच्च माध्यमिक पाठ्यक्रम

कक्षा XII

Part -II

हिंदी

केरल सरकार
शिक्षा विभाग
2015

राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, केरल
तिरुवनंतपुरम

झंडा ऊँचा रहे हमारा

आपकी पहली इकाई है झंडा ऊँचा रहे हमारा। यह इकाई स्वतंत्रता के महत्व को दर्शाकर देशप्रेम की माँग करती है । पहला पाठ भारत के राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त की देशप्रेम भरी कविता है। मातृभूमि का गुणगान करनेवाली यह कविता देश के लिए अपनी जान अर्पित करने का परोक्ष आह्वान करती है। इकाई का दूसरा पाठ सम्राट बहादुरशाह ज़फर द्वारा अपनी बेटी को जेल से भेजा गया खत है । अपनी बेटी तथा देश की जनता के प्रति सम्राट के प्यार-भरे आँसू से खत भीगा पड़ा है । आगे भारत की स्वतंत्रता की ऐतिहासिक वेला में लाल किले पर तिरंगा झंडा फहराते हुए देशवासियों को संबोधित करनेवाले प्रथम प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू का भाषण है । इकाई के हर पाठ के ज़रिए भारत का तिरंगा झंडा ऊँचाई पर लहरा रहा है।

मातृभूमि

बेटी के नाम...

मेरे भारतवासियो...

अधिगम उपलब्धियाँ

- द्विवेदी युगीन कविता की प्रवृत्तियों पर चर्चा करके कविता की आस्वादन-टिप्पणी लिखता है।
- पत्र की शैली पहचानकर विभिन्न प्रसंगों पर पत्र लिखता है।
- पत्र के आशय का विश्लेषण करके विधांतरण करता है।
- भाषण की शैली पहचानकर विभिन्न सामाजिक विषयों पर भाषण तैयार करता है।
- भाषण का आशयग्रहण करके स्वतंत्रता का महत्व पहचानकर टिप्पणी लिखता है।
- अंग्रेज़ी के छोटे-से अनुच्छेदों का हिंदी में अनुवाद करता है।

- यह चित्र किससे संबंधित है ?
- यह यात्रा किसके लिए थी ?

भारत की स्वतंत्रता के लिए लाखों देशभक्त अपनी अपनी राह पर चले थे। कुछ गुप्त रूप से, कुछ हथियार लेकर, कुछ अहिंसा की राह पर तो कुछ अपनी ओजभरी वाणी में लोगों को सचेत करते रहे। इनमें कुछ कवि अपनी पंक्तियों से देश के लिए सर्वस्व अर्पित करने का आह्वान करते रहे। इन सबका फल निकला - भारत की स्वतंत्रता। यहाँ हम ऐसी एक कविता से परिचय पाएँगे।

मातृभूमि

नीलांबर परिधान हरित तट पर सुंदर है।
सूर्य-चंद्र युग मुकुट, मेखला रत्नाकर है।।
नदियाँ प्रेम प्रवाह फूल तारे मंडन हैं।
बंदीजन खग-वृंद, शेषफन सिंहासन है।।
करते अभिषेक पयोद हैं, बलिहारी इस वेष की।
हे मातृभूमि! तू सत्य ही, सगुण मूर्ति सर्वेश की।।
जिसके रज में लोट-लोट कर बड़े हुए हैं।
घुटनों के बल सरक-सरक कर खड़े हुए हैं।।
परमहंस सम बाल्यकाल में सब सुख पाए।
जिसके कारण धूल भरे हीरे कहलाए।।
हम खेले-कूदे हर्षयुत, जिसकी प्यारी गोद में।
हे मातृभूमि! तुझको निरख, मग्न क्यों न हों मोद में ?
पाकर तुझसे सभी सुखों को हमने भोगा।
तेरा प्रत्युपकार कभी क्या हमसे होगा ?
तेरी ही यह देह, तुझी से बनी हुई है।
बस तेरे ही सुरस-सार से सनी हुई है।।
फिर अंत समय तू ही इसे अचल देख अपनाएगी।
हे मातृभूमि! यह अंत में तुझमें ही मिल जाएगी।।

- मैथिलीशरण गुप्त

शेषफन : *हिंदू मिथक के अनुसार शेषनाग के फन पर (अनंत) भूमि स्थित है। अनंत प्रकृति का प्रतीक है।*

परमहंस : *छठे साल की आयु में एक दिन रामकृष्ण परमहंस खेतों में घूम रहे थे। अचानक उनकी दृष्टि बगुलों की एक पंक्ति पर पड़ी जो काली घटाओं की ओर उड़ रहे थे। यह दृश्य देखकर वे बेहोश हो गए और उस बेहोशी में उन्हें अपरिमित खुशी और शांति का अनुभव हुआ। इस आध्यात्मिक अनुभूति ने उनके जीवन को नई दिशा दी।*

द्विवेदी युगीन प्रतिभाशाली कवि मैथिलीशरण गुप्त का जन्म उत्तर प्रदेश के चिरगाँव में 1885 को हुआ। भारतीय पुराणों के उपेक्षित कथा प्रसंग एवं पात्रों को लेकर युगानुरूप काव्य उन्होंने रचे। साकेत, यशोधरा, जयद्रथ वध, पंचवटी, काबा-करबला आदि उनकी श्रेष्ठ रचनाएँ हैं। देश ने 1954 को पद्मभूषण उपाधि से उनका सम्मान किया। 1965 को राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त का देहांत हुआ।

मेरी खोज

- दो शब्दों के मेल से बने हुए अनेक शब्द कविता में हैं। उन्हें चुनकर लिखें।
  जैसे : नीलांबर - नीले रंग का अंबर
- कवि ने मातृभूमि का वर्णन किस प्रकार किया है ?
- मातृभूमि से कवि का बचपन कैसे जुड़ा है ?
- तेरा प्रत्युपकार कभी क्या हमसे होगा - कवि इस प्रकार क्यों सोचता है ?

अनुवर्ती कार्य

- कविता की आस्वादन-टिप्पणी लिखें।

निजी परख

	पूर्ण	आंशिक	अपूर्ण
कवि का परिचय है			
काव्यधारा और रचनाकाल की सूचना है			
कविता का सार है			
अपने दृष्टिकोण से कविता का विश्लेषण किया गया है *(काव्यधारा और रचनाकाल के अनुरूप भाषा, प्रतीक आदि)*			

एक नज़र...

भारतीय परंपरा के अनुसार जननी और जन्मभूमि स्वर्ग से भी प्यारी है। देशप्रेम भारतवासी के लिए भावना ही नहीं, सच्चाई भी है। करोड़ों भारतवासियों के इस देशप्रेम को कवि ने वाणी दी है। देश के गौरव चिह्नों का संकेत करके कवि ने बताया है कि इस मिट्टी के अन्न-जल से बनी हुई देह देश की ही संपत्ति है। देश के लिए इसका समर्पण हर भारतवासी के लिए गौरव है।

प्रसंगार्थ

नीलांबर	-	नीला आकाश
परिधान	-	वस्त्र
मेखला	-	करधनी
रत्नाकर	-	समुद्र
मंडन	-	आभूषण
खग-वृंद	-	पक्षीगण
शेषफन	-	शेष नाग का फन
पयोद	-	मेघ, बादल
बलिहारी	-	आत्म समर्पण
रज	-	धूलि
लोटकर	-	लुढ़क कर, having rolled
सरकना	-	रेंगना, to crawl
निरखना	-	देखना
मोद	-	हर्ष
सनना	-	घुलना

मित्रो, यह चित्र किसको सूचित करता है ?

- हाँ, 1947 के पूर्व दो सदियों तक भारत ब्रिटिश राज के अधीन था।
- भारत को स्वतंत्र बनाने के लिए न जाने कितनों ने अपनी जान की कुर्बानी दी।
- इतिहास साक्षी है कि 1857 से भारत की स्वतंत्रता की लड़ाई शुरू हुई थी।
- इतिहास के पन्नों का एक हिस्सा यहाँ आपके सामने है...

ब्रिटिश सरकार ने 1857 की स्वतंत्रता की पहली लड़ाई को परास्त कर दिया। उन्होंने दिल्ली के अंतिम मुगल शासक बहादुर शाह ज़फ़र को 4 दिसंबर, 1858 को "मगर" नामक ब्रिटिश युद्धपोत से रंगून भेज दिया। रंगून में उनपर सख्त पहरा था। मिलने की इज़ाज़त तो दूर, वे खुलकर किसीसे बातचीत भी नहीं कर सकते थे। सख्त नज़रबंदी के बावजूद बहादुर शाह ज़फ़र ने अपनी कुछ चिट्ठियाँ दिल्ली पहुँचाईं। कुलसुम जमानी बेगम बहादुरशाह ज़फ़र की बड़ी बेटी थी। वे दिल्ली में अँग्रेज़ों की कैद में थीं। उन्होंने किसी तरह से एक खत अपने कैदी बाप को रंगून भेजा था। उसके जवाब में लिखी गई चिट्ठी यहाँ पेश है।

बेटी के नाम ...

प्यारी बिटिया,

तुमने अपने कैदी बाप को ख़त भेजा। खत क्या भेजा, मेरी जान, आँसूनामा था। बेटे ने पढ़कर सुनाया। एक दफ़ा सुना, जी न भरा। फिर कहा, बेटा फिर सुनाना। फिर सुना। वह भी रोया। मेरी आँखें भी आँसुओं से भीग गईं। कहा, बाबा, एक दफ़ा फिर पढ़ो। क्या लिखवाऊँ बेटी कि मुझपर तुम्हारे ख़त का क्या असर हुआ। तीन दफ़ा सुनने के बाद भी दिल को क़रार नहीं आया।

सच कहती हो। दिल्लीवाले मुझको रोते होंगे। वे क्या यह नहीं जानते, कि मैं भी उनको रोता हूँ। मैं तो ज़िंदा बैठा हूँ। वे तो बिना आई मौत मर गए। कितनों के बाप, कितनों के बेटे, कितनों के भाई फाँसियों पर चढ़ गए। कितने बच्चे यतीम हो गए, कितनी औरतें बेवा हो गईं। घर लुट गए नहीं बल्कि खोद डाले गए और उनपर हल चलवा दिए गए। दिल्ली में जब मेरा मुकदमा चल रहा था, उसी ज़माने में तबाही और बरबादी के किस्से सुने थे। मेरे यहाँ आ जाने के बाद, पता नहीं और क्या-क्या परेशानियाँ शहरवालों पर पड़ी होंगी। अब हँसें या रोएँ, कोई फायदा नहीं। हम सब कालेपानी में हैं। अपने वतन दिल्ली से सैकड़ों कोस दूर, घर से जुदा और ऐसे जुदा कि अब जीते-जी किसीसे मिलने की आस नहीं है। मुझे याद आया, जब तुम्हारी शादी हुई थी और 'गालीब' और 'जौक' ने तुम्हारी बारात की अगवानी के सेहरे लिखे थे।

अब यहाँ न वह लालकिला है, और न पहरेदार। बस, लकड़ी का एक पुराना-सा मकान है, जो बरसात में टपकता है और जिसमें दो-चार कमरों के सिवाय ज़्यादा गुंजाइश नहीं है।

एक दफ़ा की बात है। ईद थी। उस मौक़े पर चंद मुसलमान मेरे लिए कुछ तोहफ़े लेकर आए। मैंने उनसे कहा, 'भाई, ये तोहफ़े मैं नहीं ले सकता।' उन्होंने जब बहुत कहा तो कुछ तोहफ़े ले लिए। उसके एवज़ में मैंने मलिका का एक हार उनको दे दिया। दूसरे दिन हुक्म आया कि इन मुगलों के पास जवाहरात बहुत ज़्यादा हैं। इन कैदियों को दिया जाने वाला खर्चा इनकी ज़रूरत से ज़्यादा है। फिर वही हुआ, जिसका डर था। हमारा खर्चा आधा कर दिया गया।

क्या खबर कि यह ख़त तुमको मिलेगा भी या नहीं? सुनता हूँ, वे आदमी भरोसे के काबिल हैं, जिनके हाथ यह खत भेजा जाएगा। लेकिन कितने ही शख्स मैंने ऐसे देखे हैं, जो आखिर में दग़ाबाज़ और दूसरों के भेजे जासूस साबित हुए। लेकिन इस ख़त में मैंने ऐसा लिखा ही क्या है, जिसकी मुझे फिक्र हो। एक बाप ने एक बेटी को ख़त लिखवाया है। न इसमें अपने मुल्क की कोई बात है, न गैर-मुल्क की। हमारी कब्र परदेस में बनेगी, तय है। लेकिन अभी तो हम लकड़ी की भीगी हुई कब्र में ज़िंदा ही दफ़न हैं। जब मर जाएँगे, तब भी कब्र में ही होंगे। बस, बेटी, खुदा हाफिज़।

-तुम्हारे कैदी बाप ने लिखवाया

गालिब और जौक उर्दू एवं फारसी भाषा के महान शायर थे। मुगल काल के आखिरी शासक बहादुर शाह ज़फ़र के दरबारी कवि भी रहे थे।

मेरी खोज

- हिंदी में अन्य भाषाओं से आए हुए कई शब्द हैं। निम्नलिखित शब्दों के समानार्थी विदेशी शब्द पत्र से ढूँढ़कर लिखें।

  अनाथ -

  सांत्वना -

  देश -

  नाश -

  संभावना -

  विधवा -

  बार -

  इनाम -

  योग्य -

  व्यक्ति -

  चिंता -

- कैदी बाप को अपनी बेटी का ख़त एक आँसूनामा था - क्यों?

- दिल्लीवाले मुझको रोते होंगे... मैं भी उनको रोता हूँ - यहाँ शासक का कौन-सा गुण प्रकट होता है?

- 'यह ख़त तुमको मिलेगा भी या नहीं' - बादशाह के मन में ऐसा शक क्यों उभरा होगा?

अनुवर्ती कार्य

- बादशाह के ख़त के निम्नलिखित वाक्य पढ़ें।
  - * तीन दफ़ा सुनने के बाद भी दिल को क़रार नहीं आया।
  - * दिल्लीवाले मुझको रोते होंगे। वे क्या यह नहीं जानते कि मैं भी उनको रोता हूँ।
  - - उपर्युक्त वाक्यों के आधार पर बादशाह के चरित्र पर टिप्पणी लिखें।
- बेटी के आँसूनामा ने बादशाह के मन को विचलित कर दिया। वे उस दिन की डायरी में इसका जिक्र करते हैं। वह डायरी तैयार करें।

  सहायक संकेत:
  - * परिवारवालों की सोच
  - * दिल्लीवासियों के प्रति आकुलता
  - * ख़त पढ़ने पर उत्पन्न दर्द
- सोनू के नाम मित्र का यह पत्र पढ़ें। इसके आधार पर सोनू का जवाबी पत्र तैयार करें।

प्रिय सोनू,

तुम पढ़ाई की छुट्टियाँ कैसे बिता रही हो? मैंने तीन विषय पूरे किए। सोनू, कल एक अविस्मरणीय घटना घटी। कल पिताजी एक वृत्तचित्र की सी.डी. लाए। रात को पढ़ाई के बाद मैंने वह देखा। वाह! कितना जोशीला था... स्वतंत्रता के लिए अपनी जान का बलिदान करनेवाले वीर शहीदों की कहानी थी। सोनू हमारा देश वीरों की भूमि है। मैं यह सी.डी तुम्हें भेज रही हूँ। समय मिलने पर तुम ज़रूर देखना। देखने के बाद अपना अनुभव ज़रूर मुझे लिखना।

तिरुवल्ला
10 जुलाई 2015

तुम्हारी सहेली
सुरभि

निजी परख

	पूर्ण	आंशिक	अपूर्ण
स्वाभाविक शुरुआत है			
प्राप्त पत्र की सूचना है			
पत्र का जवाब है			
स्वाभाविक अंत है			
पत्र की शैली एवं रूपरेखा है			

➤ 'कितने बच्चे यतीम हो गए, कितनी औरतें बेवा हो गईं'। पत्र के इस प्रसंग के आधार पर 'युद्ध के भीषण परिणाम' पर एक कॉलाज़ तैयार करें।

एक नज़र...

यह अंतिम मुगल सम्राट बहादुर शाह ज़फ़र द्वारा अपनी बेटी को लिखा गया जवाबी पत्र है। इसमें बेटी और परिवार के प्रति सम्राट का प्यार, दिल्ली के अपने देशवासियों के प्रति प्रेम और सहानुभूति तथा एक सम्राट के बुरे हाल का जिक्र हुआ है। कैदखाने में रहते हुए भी उनके पत्र में साहस और देशप्रेम का स्वर मुखरित हुआ है। यह ख़त 18 मई 1860 को लिखा गया था। इसके ढाई साल बाद 17 दिसंबर 1862 को कैदखाने में ही उन्होंने अंतिम साँस ली थी। रंगून में वे दफ़नाए गए।

प्रसंगार्थ

युद्धपोत	-	war-ship
सख्त	-	कठोर
इज़ाज़त	-	अनुमति
नज़रबंदी	-	वह सज़ा जिसमें किसी व्यक्ति को किसी स्थान में कड़ी निगरानी में रखा जाता है।
पेश	-	प्रस्तुत
कैदख़ाना	-	कारागृह, jail
आँसूनामा	-	दर्दभरी वाणी
एक दफ़ा	-	एक बार
क़रार	-	राहत
फाँसी पर चढ़ाना	-	मृत्युदंड देना
यतीम	-	अनाथ
बेवा	-	विधवा
हल चलाना	-	जोतना, to plough a field
तबाही	-	नाश
बरबादी	-	नाश
कालापानी	-	देश-निकाले का दंड
कोस	-	लगभग दो मील की दूरी का नाप
जुदा होना	-	अलग होना
आस	-	आशा
बारात की अगवानी के सेहरे	-	बारात के स्वागत के अवसर पर गाए जानेवाले मांगलिक गीत

गुंजाइश	-	संभावना, possibility
चंद	-	कुछ
तोहफ़े	-	इनाम
एवज़ में	-	बदले में
जवाहरात	-	रत्नसमूह
काबिल	-	योग्य
शख़्स	-	व्यक्ति
दग़ाबाज	-	धोखा देनेवाला
जासूस	-	गुप्तचर
फ़िक्र	-	चिंता
मुल्क	-	देश
ग़ैर-मुल्क	-	विदेश
कब्र	-	मक़बरा, tomb
दफ़नाना	-	मृतक को ज़मीन में गाड़ना

आज़ादी के हस्ताक्षर

◆ अब तस्वीर के लिए एक अलग पाद-टिप्पणी दें।

दशाब्दों की कोशिशों और लाखों के बलिदानों के परिणाम स्वरूप 1947 को भारत स्वतंत्र हुआ। 14 अगस्त की मध्यरात्रि की वेला में पंडित जवाहरलाल नेहरू ने तिरंगा फहराते हुए देश से जो अपील की थी वह देखें...

मेरे भारतवासियो...

कई वर्षों पहले हमने नियति को मिलने का एक वचन दिया था, और अब समय आ गया है कि हम अपने वचन को निभाएँ, पूरी तरह न सही, लेकिन बहुत हद तक आज रात बारह बजे जब सारी दुनिया सो रही होगी, भारत जीवन और स्वतंत्रता की नई सुबह के साथ उठेगा। एक ऐसा क्षण जो

इतिहास में बहुत ही कम आता है, जब हम पुराने को छोड़ नए की तरफ जाते हैं, जब एक युग का अंत होता है, और जब वर्षों से शोषित एक देश की आत्मा, अपनी बात कह सकती है, यह एक संयोग है कि इस पवित्र मौके पर हम समर्पण के साथ ख़ुद को भारत और उसकी जनता की सेवा, और उससे भी बढ़कर सारी मानवता की सेवा करने के लिए प्रतिज्ञा ले रहे हैं।

इतिहास के आरंभ के साथ ही भारत ने अपनी अंतहीन खोज प्रारंभ की, और न जाने कितनी ही सदियाँ इसकी भव्य सफलताओं और असफलताओं से भरी हुई हैं। चाहे अच्छा वक़्त हो या बुरा, भारत ने कभी इस खोज से अपनी दृष्टि नहीं हटाई और

'आज हम दुर्भाग्य के एक युग का अंत कर रहे हैं और भारत पुनः खुद को खोज पा रहा है।' पंडितजी के इस कथन का तात्पर्य क्या है?

कभी भी अपने उन आदर्शों को नहीं भूला जिसने इसे शक्ति दी। आज हम दुर्भाग्य के एक युग का अंत कर रहे हैं और भारत पुनः खुद को खोज पा रहा है। आज हम जिस उपलब्धि का उत्सव मना रहे हैं, वह महज़ एक कदम है, नए अवसरों के खुलने का। इससे भी बड़ी विजय और उपलब्धियाँ हमारी प्रतीक्षा कर रही हैं। क्या हममें इतनी शक्ति और बुद्धिमत्ता है कि हम इस अवसर को समझें और भविष्य की चुनौतियों को स्वीकार करें ? भविष्य में हमें विश्राम करना या चैन से नहीं बैठना है बल्कि निरंतर प्रयास करना है ताकि हम जो वचन बार-बार दोहराते रहे हैं और जिसे हम आज भी दोहराएँगे, उसे पूरा कर सकें। भारत की सेवा का अर्थ है लाखों-करोड़ों पीड़ित लोगों की सेवा करना। इसका मतलब है गरीबी और अज्ञानता को मिटाना। बीमारियों और अवसर की असमानता को मिटाना। हमारी पीढ़ी के सबसे महान व्यक्ति की यही महत्वाकांक्षा रही है कि हर एक आँख से आँसू मिट जाएँ। शायद ये हमारे लिए संभव न हो, पर जब तक लोगों की आँखों में आँसू हैं और वे पीड़ित हैं तब तक हमारा काम खत्म नहीं होगा। और इसलिए हमें परिश्रम करना होगा ताकि हम अपने सपनों को साकार कर सकें।

वे सपने भारत के लिए हैं, पर साथ ही वे पूरे विश्व के लिए भी हैं। आज कोई खुद को बिलकुल अलग नहीं सोच सकता क्योंकि सभी राष्ट्र और लोग एक दूसरे से बड़ी समीपता से जुड़े हुए हैं। शांति को अविभाज्य कहा गया है। इसी तरह से स्वतंत्रता भी अविभाज्य है। समृद्धि भी और विनाश भी। अब इस दुनिया को छोटे-छोटे हिस्सों में नहीं बाँटा जा सकता। हमें स्वतंत्र भारत का महान निर्माण करना है, जहाँ उसके सारे बच्चे रह सकें।

जय हिंद !

मेरी खोज

- नेहरू ने अपने भाषण में योजकों (वाक्यों को जोड़नेवाले शब्द) से वाक्यों को जोड़ दिया है। उनकी सूची तैयार करें।

  जैसे : कि, और

अनुवर्ती कार्य

- नेहरूजी का भाषण पढ़नेवाली एक छात्रा अपने मित्र से इसके बारे में बातचीत करती है। वह बातचीत तैयार करें।
- निम्नलिखित अनुच्छेद का संक्षेपण करें।

कई वर्षों पहले हमने नियति को मिलने का एक वचन दिया था, और अब समय आ गया है कि हम अपने वचन को निभाएँ, पूरी तरह न सही, लेकिन बहुत हद तक आज रात बारह बजे जब सारी दुनिया सो रही होगी, भारत जीवन और स्वतंत्रता की नई सुबह के साथ उठेगा। एक ऐसा क्षण जो इतिहास में बहुत ही कम आता है, जब हम पुराने को छोड़ नए की तरफ जाते हैं, जब एक युग का अंत होता है, और जब वर्षों से शोषित एक देश की आत्मा, अपनी बात कह सकती है, यह एक संयोग है कि इस पवित्र मौके पर हम समर्पण के साथ खुद को भारत और उसकी जनता की सेवा, और उससे भी बढ़कर सारी मानवता की सेवा करने के लिए प्रतिज्ञा ले रहे हैं।

निजी परख

	पूर्ण	आंशिक	अपूर्ण
मुख्य आशयों का चयन किया है			
अनावश्यक विस्तार को छोड़ा है			
अपनी भाषा को स्वीकारा है			
उचित शीर्षक दिया है			

➤ ऐतिहासिक दंडी यात्रा की पूर्व संध्या में गाँधीजी के विख्यात भाषण का अंश पढ़ें और हिंदी में अनुवाद करें।

"In all probability this will be my last speech to you. Even if the Government allow me to march tomorrow morning, this will be my last speech on the sacred banks of the Sabarmati. Possibly these may be the last words of my life here. I have already told you yesterday what I had to say. I wish these words of mine reached every nook and corner of the land."

(Probability - संभावना, Sacred - पवित्र, Nook and corner -कोने कोने)

निजी परख

	पूर्ण	आंशिक	अपूर्ण
स्रोत भाषा का आशय ग्रहण किया है			
आशय का विश्लेषण किया है			
लक्ष्य भाषा में आशय को अनूदित किया है			

प्रसंगार्थ

नियति - भाग्य
संयोग - आकस्मिक
महज़ - केवल

उठ खड़े हो भारत की उस एकता के लिए जिसने हमें स्वतंत्रता दिलाई, जो हमें सुरक्षित रखेगी और भारत को विकसित कराएगी।

इकाई दो

निज भाषा उन्नति अहै

आपकी दूसरी इकाई है निज भाषा उन्नति अहै। विश्व की भाषाओं में हिंदी भाषा का महत्वपूर्ण स्थान है। पहला पाठ है सातवें विश्व हिंदी सम्मेलन की यात्रा के दौरान सूरीनाम की विशेषता तथा वहाँ हिंदी भाषा की गरिमा दिखानेवाला सफ़रनामा। हिंदी भाषा के समान हिंदी साहित्य की भी एक गौरवमयी परंपरा है। इस परंपरा का स्वर्णिम समय है भक्तिकाल। भक्तिकाल को शोभा देनेवाली साहित्यिक भाषा है ब्रजभाषा। ब्रजभाषा के अनन्य कवि हैं सूरदास। इकाई का दूसरा पाठ कृष्ण के प्रति यशोदा माँ के वात्सल्य वर्णन और गोपियों के प्रेम से ओतप्रोत है। इकाई का तीसरा पाठ 'दोस्ती' हिंदी फिल्मी गीत का है। विश्व भर में हिंदी के प्रति प्रेम उत्पन्न कराने में फिल्मी गीतों की अहम भूमिका रही है। हिंदी भाषा की खूबी है विशिष्ट अर्थ प्रदान करने वाले शब्दों का भंडार। अंतिम पाठ उच्च माध्यमिक शिक्षा के क्षेत्र में प्रयुक्त पारिभाषिक शब्दों से परिचित कराता है। कुल मिलाकर यह इकाई हिंदुस्तान के भीतर और बाहर हिंदी के स्वरूप का दिग्दर्शन कराती है।

अधिगम उपलब्धियाँ

- सफ़रनामा की शैलीगत विशेषताएँ पहचानकर आस्वादन करता है।
- विभिन्न प्रसंगों का विधांतरण करता है।
- सफ़रनामा के आशय का विश्लेषण करके टिप्पणी लिखता है।
- मध्यकालीन भक्तकवि सूरदास के पदों की विशेषताओं पर चर्चा करके व्याख्या करता है।
- सूरदास के पदों का आस्वादन करके विधांतरण करता है।
- फिल्मी गीतों की विशेषताएँ पहचानकर आस्वादन करता है एवं टिप्पणी लिखता है।
- हिंदी के प्रचार-प्रसार में हिंदी फिल्मी गीतों की भूमिका एवं प्रासंगिकता पहचानकर गीतों का संकलन करता है।
- विज्ञान, वाणिज्य एवं मानविकी के क्षेत्र में प्रयुक्त पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग करता है।

सूरीनाम में पहला दिन

मेरे लाल...

दोस्ती

मंज़िल की ओर...

"हिंदी हमारे राष्ट्र की अभिव्यक्ति का सरलतम स्रोत है"-

सुमित्रानंदन पंत

"मेरे भाग्य में अगला जन्म बदा है तो मैं आवारा के रूप में जन्म लेना चाहूँगा ताकि हमेशा मनमाना घूम सकूँ" -

एस. के. पोटेक्काट्ट

अब हमारा सफ़र शुरू हो...
हिंदी की दुनिया में...

सूरीनाम में पहला दिन

भूगोल की पुस्तकों में कभी पढ़ा था - भूमध्यरेखीय प्रदेशों में भीषण गरमी पड़ती है। प्रायः प्रतिदिन बारिश। इसलिए संसार में सबसे अधिक घने वन इसी क्षेत्र में पाए जाते हैं। ब्राजील की तिरानबे प्रतिशत भूमि गहरी हरियाली से आच्छादित है।

अतीत का यह पढ़ा आज प्रत्यक्ष देख रहे हैं - विमान से झाँक रहे हैं - नीला जल, काले-घने बादल और दूर कहीं हरियाली के छींटे।

विमान उतरने की प्रक्रिया में धीरे-धीरे धरती की ओर झुक रहा है। यात्रियों का कौतूहल भी बढ़ता चला जा रहा है। लगभग बीस हज़ार किलोमीटर की लंबी यात्रा के पश्चात् एक प्रकार के सुकून का अहसास !

सूरीनाम की राजभाषा डच है जबकि अंग्रेज़ी व्यापक रूप से बोली जाती है। भारतीय अप्रवासी सरनामी हिंदुस्तानी बोलते हैं जो भोजपुरी तथा अवधी भाषाओं का मिश्रण है तथा इसमें कुछ शब्द डच, अंग्रेज़ी तथा क्रियोल के भी प्रयुक्त होते हैं।

सूरीनाम, जो वर्ष 1975 तक डच उपनिवेश था, दक्षिण अमेरिका के उत्तर-पूर्वी तट पर स्थित है। यह फ्रंच गुयाना एवं गुयाना के मध्य, ब्राजील के उत्तर में स्थित है। इसका अधिकांश भू-भाग लहरदार पहाड़ियों एवं संकरे दलदली तटवर्ती मैदानों से युक्त है।

हिंदी भाषा की सत्रह बोलियाँ हैं। भोजपुरी और अवधी उनमें से दो प्रमुख बोलियाँ हैं।

हनुमानचालीसा हनुमान को श्रीराम के एक आदर्श भक्त के रूप में चित्रित अवधी भाषा में लिखित चालीस चौपाइयों की रचना है। इसके रचयिता तुलसीदास हैं।

तुलसीदास द्वारा अवधी भाषा में लिखित रामकथा पर आधारित महाकाव्य है रामचरितमानस।

जिस हिंदी को भोजपुरी-अवधी के रूप में, 'हनुमानचालीसा' तथा 'रामचरितमानस' आदि धर्मग्रंथों के माध्यम से भारत से जाते समय वे ले गए थे अपने साथ और जिसे उन्होंने तूफान के बीच दीये की तरह जलाए रखा - आज एक सौ तीस साल बाद वह एक नए रूप में साकार होकर उपस्थित हो रहा है। उसका वैश्विक स्वरूप उभर रहा है ! वह अब गिरमिटिया श्रमिकों की ही नहीं, शासकों, राष्ट्राध्यक्षों की भी भाषा बन गई है जो संसार के एक सौ बीस देशों में किसी-न-किसी रूप में अपनी उपस्थिति का अहसास जता रही है।

मॉरिशस, त्रिनिदाद, ब्रिटेन के पश्चात् 'विश्व हिंदी सम्मेलनों' की यह सातवीं यात्रा है - सातवीं मंज़िल। एक सौ तीस साल पहले जो प्रथम भारतीय श्रमिक यहाँ आए थे, उनके आगमन की स्मृति में इस 'हिंदी महापर्व' का आयोजन हो रहा है। भारत के अलावा अनेक देशों के हिंदी लेखक, हिंदी प्राध्यापक, हिंदी प्रचारक, हिंदी सेवी अपनी उपस्थिति का अहसास जता रहे हैं।

पारामारिबो शहर लेखक को भारतीय शहर जैसा क्यों लगा?

लगभग साढ़े चार लाख आबादीवाले इस देश में, जिसके सैंतीस प्रतिशत लोग भारतीय मूल के हैं, सर्वत्र भारतीय-ही-भारतीय दीख रहे हैं। पारामारिबो शहर सूरीनामी नहीं, एक भारतीय शहर जैसा लग रहा है।

दिनांक 6 जून को प्रातः सम्मेलन का शुभारंभ करते हुए सूरीनाम के अफ़्रिकी मूल के राष्ट्रपति रुनाल्डो वेनेत्शियान ने अपने उद्‌बोधन में कहा था - 'सूरीनाम और भारत के बीच प्रगाढ़ आत्मीय संबंध है। दोनों देश

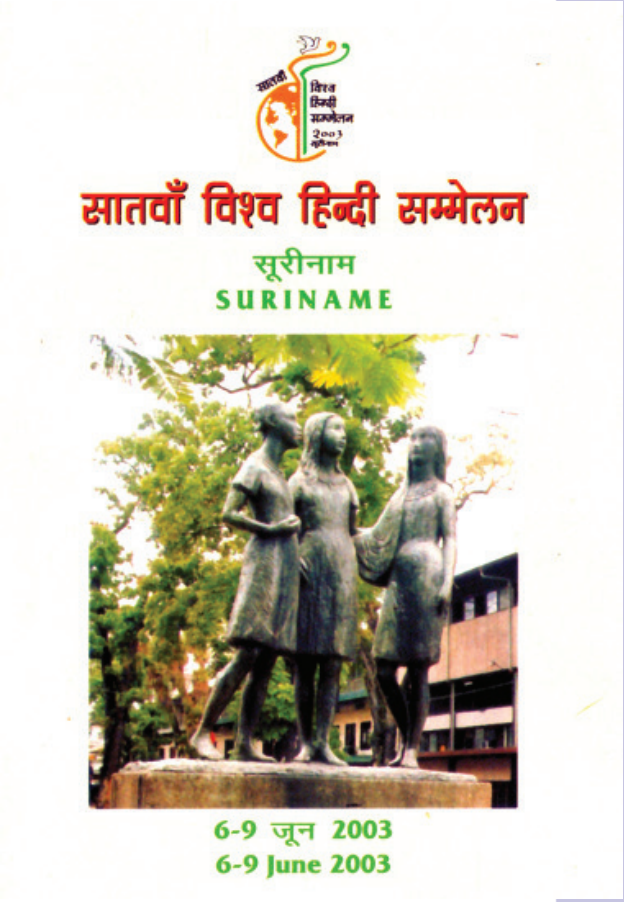

अनेक अर्थों में एक दूसरे से गहरे जुड़े हैं। दोनों के बीच पुराने भाषाई संबंध हैं। भाषा भावों की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम होती है। हिंदी की जननी संस्कृत की अपनी विशेषताएँ हैं। उसके साथ-साथ आज विश्व की एक प्रमुख भाषा के रूप में हिंदी भी उभर रही है। सूरीनाम में हिंदी के प्रचार-प्रसार में, हिंदी को आम आदमी तक पहुँचाने में हिंदी फिल्मों तथा संगीत का भी विशेष योगदान रहा है। हिंदी चलचित्रों के प्रति सूरीनाम के भारतवंशियों का ही नहीं, अन्य सूरीनामी लोगों का भी गहरा लगाव है।'

एक दीप प्रज्वलित होते ही लगा कि एक साथ न जाने कितने जगमगाते दीपक जल उठे हैं। सूरीनामी भारतवंशियों का उत्साह देखने योग्य था। कहीं ऐसा अहसास हो रहा था जैसे एक सौ तीस साल से बिछुड़े बंधु आज फिर गले मिल रहे हैं। यह 'भरत-मिलाप' बहुत आह्लादित कर रहा था।

- हिमांशु जोशी

'भरत-मिलाप' एक आलंकारिक प्रयोग है। आत्मीयता से जब एक भाई दूसरे भाई से मिलता है तब उसे सूचित करने के लिए 'भरत-मिलाप' का प्रयोग होता है।

हिमांशु जोशी हिंदी के बहुमुखी प्रतिभावान रचनाकार हैं। हिंदी की लगभग सभी विधाओं में उन्होंने अपनी लेखनी चलाई। उत्तराखंड में 1935 को उनका जन्म हुआ। पत्रकारिता तथा आकाशवाणी के क्षेत्र में उन्होंने कार्य किया। 'यात्राएँ', 'नॉर्वे : सूरज चमके आधी रात' आदि उनके श्रेष्ठ यात्रा-वृत्तांत हैं।

मेरी खोज

➤ सफ़रनामा में कई विशेषण शब्दों का प्रयोग हुआ है। जैसे : **भीषण** गरमी। इस प्रकार के शब्द पाठ-भाग से ढूँढ़कर खंभा भरें।

विशेषण	विशेष्य
भीषण	गरमी
_ _ _ _ _	वन
_ _ _ _ _	जल
_ _ _ _ _	यात्रा
_ _ _ _ _	स्वरूप
_ _ _ _ _	मंज़िल

अनुवर्ती कार्य

➤ लेखक विश्व हिंदी सम्मेलन में भाग लेने के लिए पारामारिबो पहुँचे। सम्मेलन के उद्घाटन समारोह के बाद लेखक की बातचीत किसी भागीदार के साथ होती है। वह बातचीत लिखें।

सहायक संकेत:

* सम्मेलन का अनुभव
* राष्ट्रपति का भाषण
* हिंदी का प्रचार

➤ 'विश्वभाषा के रूप में हिंदी का प्रचार-प्रसार' विषय पर भाषण तैयार करें।

* संसार की सबसे बड़ी भाषाओं में एक।
* सांस्कृतिक विकास में सहायक।
* विश्व सौहार्द का संवाहक।
* बोलचाल में आसान।

निजी परख

	पूर्ण	आंशिक	अपूर्ण
भूमिका है			
बिंदुओं को विकसित किया है			
अपना मत है			
मत का समर्थन किया है			
भाषण-शैली है			
उपसंहार है			

➤ सातवाँ विश्व हिंदी सम्मेलन सूरीनाम में होनेवाला है। उसके लिए एक आकर्षक पोस्टर तैयार करें।

निजी परख

	पूर्ण	आंशिक	अपूर्ण
ज़रूरी विवरण है			
हिंदी का महत्व सूचित है			
संक्षिप्त वाक्य/वाक्यांश है			
आकर्षक रूपरेखा है			

विश्व हिंदी सम्मेलन

पहला	1975 जनवरी 10 से 12	नागपुर	भारत
दूसरा	1976 अगस्त 28 से 30	पोर्ट लूई	मॉरिशस
तीसरा	1983 अक्तूबर 28 से 30	नई दिल्ली	भारत
चौथा	1993 दिसंबर 02 से 04	पोर्ट लूई	मॉरिशस
पाँचवाँ	1996 अप्रैल 04 से 08	पोर्ट ऑफ स्पेन	त्रिनिदाद और टोबैगो
छठा	1999 सितंबर 14 से 18	लंदन	ब्रिटन
सातवाँ	2003 जून 06 से 09	पारामारिबो	सूरीनाम
आठवाँ	2007 जुलाई 13 से 15	न्युयॉर्क	अमरीका
नवाँ	2012 सितंबर 22 से 24	जोहान्सबर्ग	दक्षिण अफ्रीका

प्रसंगार्थ

भूगोल	-	geography
आच्छादित	-	आवृत, covered
हरियाली के छींटे	-	हरियाली के कण
सुकून	-	संतोष, satisfaction
अहसास	-	एहसास, feeling
दीया	-	दीप
वैश्विक	-	universal
गिरमिटिया श्रमिक	-	contracted labourer
जताना	-	बताना, समझाना
मंज़िल	-	लक्ष्य
प्राध्यापक	-	lecturer
आबादी	-	जनसंख्या
प्रगाढ़	-	सुदृढ़
आम आदमी	-	common people
बिछुड़े	-	अलग हुए

लोरी लोरी लोरी...
लोरी लोरी लोरी...
चंदनिया छुप जाना रे
छन भर को लुक जाना रे
निंदिया आँखों में आए
बिटिया मेरी सो जाए

लोरी कैसी लगी? लोरी में कौन-सा भाव प्रकट होता है? माधुर्य है न? तो प्राचीन हिंदी का ब्रजभाषा में लिखित वात्सल्य-भरा एक पद पढ़ें।

मेरे लाल...

सुतमुख देखि जसोदा फूली।
हरषित देखि दूध की दँतियाँ प्रेम मगन तनु की सुधि भूली।।
बाहिर ते तब नंद बुलाए देखौ धौं सुंदर सुखदाई।
तनक तनक सी दूध की दँतियाँ देखौ नैन सुफल करो आई।।
आनंद सहित महर तब आए मुख चितवन दोउ नैन अघाई।
'सूर' स्याम किलकत द्विज देख्यो मनो कमल पर बीजु जमाई।।

सूरदास

सूरदास का पद आपको कैसे लगा? सूरदास ने वात्सल्य के साथ-साथ कृष्ण की मुरली-माधुरी का तथा कृष्ण के प्रति गोपियों के प्रेम का वर्णन भी किया है। यह पद पढ़ें ...

हे कान्ह...

जबहीं बन मुरली स्रवन ....
चकित भई गोप कन्या सब धाम काम बिसरीं ।।
कुल मरजाद बेद की आज्ञा नेकहु नाहिं डरीं।
स्याम सिंधु सरिता ललनागन जल की ढरनि ढरीं।।
सुत पति नेह भवन जन संका लज्जा नहीं करी।
'सूरदास' प्रभु मन हरि लीन्हों नागर नवल हरी।।

भारतीय आर्यभाषाओं की परंपरा में पश्चिमी उत्तर प्रदेश के आगरा, मथुरा केंद्रित व्रजक्षेत्र में विकसित बोली है व्रजभाषा। वल्लभ संप्रदाय के प्रभाव में जब ब्रजबोली में कृष्ण विषयक साहित्य लिखा जाने लगा तो यह बोली साहित्यिक भाषा बन गई। भक्तिकाल के महान कवि सूरदास से लेकर आधुनिक काल के विख्यात कवि वियोगी हरि तक ने व्रजभाषा में प्रबंध काव्य रचे।

सूरदास सगुण भक्तिधारा के सर्वश्रेष्ठ कृष्णभक्त कवि हैं। उत्तरप्रदेश में 15 वीं सदी के अंतिम दशकों में उनका जन्म हुआ था। वे जन्मांध माने जाते हैं। सूरदास का वात्सल्य वर्णन अद्‌वितीय है। सूरसागर की बाललीलाएँ इसके उत्तम दृष्टांत हैं। श्रृंगार रस के वर्णन में भी उन्होंने अपनी कुशलता प्रकट की है। कृष्ण और गोपिकाओं के प्रेम का वर्णन इसका उदाहरण है।

मेरी खोज

- समानार्थी शब्द पठित पदों से ढूँढ़कर लिखें।

दाँत	सफल	मर्यादा
युवती	देखकर	सागर
वेद	तो	सुनकर
संतुष्ट हुई	होश	पुत्र
छोटा	दोनों	भूल गई
दृष्टि	बिजली	गोपिकाएँ
प्रवाह	चतुर	नया

- यशोदा माँ अपने आपको भूल गईं। कब और क्यों?
- 'मनो कमल पर बीजु जमाई' - का तात्पर्य क्या है?
- गोपिकाएँ कब अपने को भूलकर दौड़ीं?

अनुवर्ती कार्य

- बाललीला से संबंधित पहले पद की आस्वादन-टिप्पणी तैयार करें।
- मुरली की ध्वनि में लीन प्रणयातुर दो गोपिकाओं के बीच होनेवाली बातचीत लिखें।

सहायक संकेत:

* मुरली की ध्वनि की मधुरिमा
* कृष्ण के प्रति अनुराग
* अपने को भूल जाना

निजी परख

	पूर्ण	आंशिक	अपूर्ण
प्रसंगानुसार अभिव्यक्ति है			
स्वाभाविक शुरुआत है			
प्रवाहमयता है			
कल्पना है			
स्वाभाविक अंत है			

एक नज़र...

अपने बेटे का मोहक चेहरा देखकर माता यशोदा बहुत खुश हुईं। आह्लाद के साथ बेटे के दुधिए दाँतों को देखकर लाड़-प्यार में मग्न यशोदा का होश खो जाता है अर्थात् अपने आपको वह भूल जाती है। वह बाहर से अपने पतिदेव नंद को बुलाकर पुत्र का सुंदर सुखदाई रूप देखने को कहती है। वह कहती है, पुत्र के छोटे-छोटे दुधिए दाँतों को देखने पर नयन-सुख प्राप्त हो जाता है। पत्नी की बातें सुनकर आनंदित नंद अंदर आए, उनके मुख और चितवन खुशी से भर गए। सूरदास कहते हैं कि किलकारी करनेवाले कृष्ण के दाँतों को देखकर ऐसा लगता है मानो लाल कमल पर बिजली जम गई हो। बालकृष्ण का सौंदर्य अनुपम है। उनकी चेष्टाएँ हृदयहारी तथा अद्वितीय हैं।

जब मुरली का स्वर सुनाई पड़ा तब गोपिकाएँ चकित हुईं और वे सब कामकाज भूल गईं। कुल की मर्यादा तथा धर्मग्रंथों के अनुशासन से वे बिलकुल नहीं डरीं। पुत्र-पति का स्नेह, घर-बार तथा लोक-लाज की परवाह किए बिना वे कृष्ण रूपी सिंधु में सरिता के जल के समान जा मिलीं। सूरदास कहते हैं कि चतुर कृष्ण नित्य नए तरीके से गोपिकाओं के मन को हर लेते हैं।

प्रसंगार्थ

फूली	-	खुश हुई/प्रफुल्लित हुई
सुतमुख	-	पुत्र का मुख
दूध की दँतियाँ	-	milk teeth
मग्न	-	लीन
तनु	-	युवती
सुधि भूली	-	अपने को भूलकर
बाहिर ते	-	बाहर से
देखौ धौ	-	देखो तो

तनक	-	छोटा
नैन सुफल करो	-	नयनों के होने का सुफल पाओ
महर	-	श्रेष्ठ पुरुष (नंद)
चितवन	-	दृष्टि
दोऊ	-	दोनों
अघाई	-	संतुष्ट हुई, तृप्त हुई
श्याम	-	कान्ह
किलकत	-	किलकारी करना (हर्ष ध्वनि करना)
द्विज	-	दाँत
बीजु	-	बिजली
जमाई	-	जम गई
बन	-	वन
स्रवन परी	-	सुनाई पड़ी
धाम काम	-	कामकाज
बिसरीं	-	भूल गईं
मरजाद	-	मर्यादा
बेद	-	वेद
नेकहु	-	थोड़ा-भी
नाहिं	-	नहीं
ललनागन	-	गोपिकाएँ
ढरनि	-	प्रवाह
ढरीं	-	बही
नेह	-	स्नेह
जन संका	-	लोगों की आशंका
हरि लीन्हों	-	हर लिया
नागर	-	चतुर
नवल	-	नया

- फिल्मी गीत आपको पसंद है न ?
- हिंदी भाषा को लोकप्रिय बनाने में फ़िल्मी गीत कहाँ तक उपयोगी रहे हैं ?

देश में हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार को गति देने में हिंदी फिल्मी गीतों की अहम भूमिका रही है। एक ज़माने में भारत के सुदूर कोनों में जहाँ हिंदी भाषा का नामोनिशान तक नहीं था, वहाँ फ़िल्मी गीतों ने आकाशवाणी के माध्यम से गाँव-गाँव का दिल जीत लिया और हिंदी को संपर्क भाषा का दर्जा दिया। आज भी वह सिलसिला ज़ारी है। ऐसा एक गीत सुनें...

दोस्ती

ये दोस्ती ...
हम नहीं तोड़ेंगे
तोड़ेंगे दम मगर
तेरा साथ ना छोड़ेंगे
मेरी जीत, तेरी जीत
तेरी हार, मेरी हार
सुन ऐ मेरे यार
तेरा ग़म, मेरा ग़म
मेरी जान, तेरी जान
ऐसा अपना प्यार
जान पे भी खेलेंगे
तेरे लिए ले लेंगे
सबसे दुश्मनी
ये दोस्ती.....
लोगों को आते हैं
दो नज़र हम मगर
देखो दो नहीं
हों जुदा या खफ़ा
ऐ खुदा है दुआ
ऐसा हो नहीं
खाना-पीना साथ है
मरना-जीना साथ है
सारी जिंदगी
ये दोस्ती...

आनंद बख्शी

फिल्म
शोले
संगीतकार
आर.डी.बर्मन
पार्श्वगायक
किशोर कुमार
मन्ना डे

वर्तमान पाकिस्तान के रावलपिंडी में 1930 को आनंद बख्शी का जन्म हुआ। 'भला आदमी' फिल्म में गीतकार बनकर उनका पदार्पण हिंदी फिल्मी जगत में हुआ। अपने जीवनकाल में उन्होंने करीब 4000 गीत लिखे। 72 साल की आयु में 2002 को मुंबई में उनका निधन हुआ। फिल्म फेयर तथा ऐ.ऐ.एफ.ए पुरस्कारों से वे सम्मानित थे।

''गीतकार हृदय से कवि होते हैं, परंतु वह न कभी अपने उद्‌गारों को वाणी देता न भाषा पर अपना अधिकार दिखाने का अनावश्यक साहस करता। एक गीत उसकी कथा तथा प्रसंग की सृष्टि होती है।'' *-आनंद बख्शी*

आर. डी. बर्मन (1939 - 1994)

भारतीय फिल्मी संगीत जगत में आर. डी. बर्मन के नाम से मशहूर राहुल देव बर्मन ने हिंदुस्तानी के साथ पाश्चात्य संगीत का मिश्रण करके भारतीय संगीत को एक अलग पहचान दी।

किशोर कुमार

(1929-1987)

भारतीय सिनेमा के मशहूर पार्श्वगायक किशोर कुमार ने कई भारतीय भाषाओं के गीतों को आवाज़ दी थी। फिल्मी जगत में अभिनय और निर्देशन के क्षेत्र में भी उन्होंने अपनी पहचान जमाई। उनका असली नाम आभास कुमार गाँगुली था।

मन्ना डे

(1919-2013)

भारतीय फिल्मी जगत के सुप्रसिद्ध पार्श्वगायक मन्ना डे ने 1942 को फिल्म 'तमन्ना' से फिल्मी गायन की शुरुआत की। 3000 से अधिक गीतों को उन्होंने स्वर दिया। पद्मश्री, पद्मभूषण, तथा दादा साहब फालके पुरस्कारों से मन्ना डे सम्मानित हैं।

शोले

हिंदुस्तान की सार्वकालिक बेहतरीन फिल्म 'शोले' 1975 में बनी हिंदी भाषा की फिल्म है। जावेद अख्तर और सलीम खान की पटकथा पर रमेश सिप्पी के निर्देशन में शोले का जन्म हुआ। धर्मेंद्र, अमिताभ बच्चन, संजीव कुमार, अंजत खान, हेम मालिनी और जया बच्चन इसके कलाकार रहे। इस फिल्म ने सौ से ज्यादा सिनेमा घरों में रजतजयंती मनाई। मुँबई के मिनर्वा सिनेमाघर में इसे लगातार पाँच साल तक प्रदर्शित किया गया।

मेरी खोज

- इन शब्दों के समानार्थी शब्द गीत में ढूँढ़ें।
  दुख, दृष्टि, अलग, क्रोध, ईश्वर, आशीर्वाद
- दोस्ती को सूचित करनेवाली आपकी पसंद की सबसे श्रेष्ठ पंक्ति चुनकर लिखें।

अनुवर्ती कार्य

- आस्वादन-टिप्पणी लिखें।
- 'शोले' फिल्म देखें और फिल्म में प्रसंग के अनुरूप 'ये दोस्ती' गीत के औचित्य पर चर्चा करें।
- मनपसंद पाँच हिंदी फिल्मी गीतों का संकलन करें और उनके गीतकार, संगीतकार तथा पार्श्वगायक का परिचय भी तैयार करें।

प्रसंगार्थ

ग़म - दुख
जुदा - अलग
ख़फ़ा - नाराज़

मंज़िल की ओर...

भारतीय रिज़र्व बैंक सर्विसेज़ बोर्ड, मुंबई विज्ञापन सं. 12/2015-16

1. भारतीय नागरिकों से भारतीय रिज़र्व बैंक में राजभाषा अधिकारी ग्रेड ए के पद पर नियुक्ति के लिए आवेदन आमंत्रित किए जाते हैं। कुल रिक्तियां 12 हैं।
2. इन पदों के लिए उम्मीदवार केवल ऑन-लाइन तरीके द्वारा बैंक की वेबसाइट (www.rbi.org.in) के माध्यम से आवेदन कर सकते हैं। ऑन-लाइन आवेदन जमा करने के बाद उम्मीदवार ऑन-लाइन आवेदन का प्रिंटआउट अनिवार्य रूप से निकाल लें।
3. अनिवार्य रूप से यह अपेक्षित है कि ऑन-लाइन आवेदन का प्रिंटआउट (हार्ड कापी) प्रमाणपत्रों/दस्तावेजों की प्रतियों तथा विधिवत् भरे हुए बायो-डाटा फार्म के साथ अंतिम तारिख तक साधारण डाक द्वारा महाप्रबंधक, भारतीय रिज़र्व बैंक सर्विसेज़ बोर्ड, पोस्ट बैग नं. 4618, मुंबई सेंट्रल डाकघर, मुंबई 400008" को भेजें।
4. अन्य सभी ब्यौरों जैसे आयु, अर्हता, अनुभव, चयन योजना, ऑन-लाइन आवेदन ज़मा करने तथा अन्य अनुदेशों के लिए कृपया दिनांक 13 अगस्त 2015 को भारतीय रिज़र्व बैंक की वेबसाइट (www.rbi.org.in) पर प्रदर्शित किया जानेवाला तथा दिनांक 23-29 जुलाई 2015 के रोज़गार समाचार में प्रकाशित होनेवाला विस्तृत विज्ञापन देखें।
5. महत्वपूर्ण तारीखें :-

वेबसाइट लिंक खुला रहेगा-आवेदनों के ऑन-लाइन पंजीकरण के लिए	13.08.2015 से 10.09.2015 तक
शुल्क का भुगतान ऑन-लाइन	13.08.2015 से 10.09.2015 तक
बैंक शाखाओं में शुल्क का भुगतान (ऑफ-लाइन)	19.08.2015 से 12.09.2015 तक
प्रमाणपत्रों/दस्तावजों की प्रतियों तथा बायो-डाटा फार्म के साथ आवेदन की हार्ड कॉपी प्राप्त करने की अंतिम तारीख	19.09.2015 (अपराह्न 6 बजे)

वीणा : जी, मैं वीणा।

श्रीवास्तव : अच्छा, अंदर बैठिए। दुपहर को आपके प्रोफसर ने फोन किया था।

वीणा : जी, मैं भारतीय रिज़र्व बैंक में राजभाषा अधिकारी के पद की उम्मीदवार हूँ। कृपया मुझे.....

श्रीवास्तव : हाँ वीणा, प्रोफसर ने सब कुछ बता दिया था। लो वीणा, यह हमारा संविधान है। इसमें राजभाषा का भी उल्लेख है। यह पारिभाषिक शब्दावली है। ये दोनों अपने पास रख लेना।

वीणा : हाँ जी, बहुत-बहुत धन्यवाद।

भाग 17

राजभाषा

अध्याय 1- संघ की भाषा

343 संघ की राजभाषा (1) संघ की राजभाषा हिंदी और लिपि देवनागरी होगी। संघ के शासकीय प्रयोजनों के लिए प्रयुक्त होनेवाले अंकों का रूप भारतीय अंकों का अंतर्राष्ट्रीय रूप होगा।

हिंदी भारत की राजभाषा है। इस कारण से मुख्य विषय के रूप में हिंदी पढ़नेवाले छात्रों के लिए देश भर में हज़ारों की संख्या में रोज़गार के अवसर हैं। राजभाषा अधिकारी, हिंदी अफ़सर, वरिष्ठ हिंदी अनुवादक, कनिष्ठ हिंदी अनुवादक, हिंदी प्राध्यापक, हिंदी आशुलिपिक, संवाददाता, हिंदी टंकक आदि आदि...। इन पदों पर रहकर आपको पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग करना होगा। अब हम देखेंगे आपकी कक्षाओं में प्रयुक्त शब्दों का पारिभाषिक रूप...

Acceleration	-	त्वरण
Accountancy	-	लेखाशास्त्र
Advance	-	पेशगी
Affidavit	-	शपथ-पत्र
Algebra	-	बीज गणित
Archaeology	-	पुरातत्व शास्त्र
Atmosphere	-	वायुमंडल
Atom	-	परमाणु
Average	-	औसत
Bacteria	-	जीवाणु
Bio-diversity	-	जैव-विविधता
Bio-chemistry	-	जैव-रसायन
Blood pressure	-	रक्त चाप
Borrower	-	उधारकर्ता
Botany	-	वनस्पति-विज्ञान
Certificate	-	प्रमाणपत्र
Cess	-	उपकर
Chemistry	-	रसायन-विज्ञान
Colonialism	-	उपनिवेशवाद
Commerce	-	वाणिज्य
Copyright	-	सर्वाधिकार

Discount	-	बट्टा
Eclipse	-	ग्रहण
Ecology	-	पारिस्थितिकी
Economics	-	अर्थशास्त्र
Energy	-	ऊर्जा
Equation	-	समीकरण
Geography	-	भूगोल
Geometry	-	रेखागणित
Gravitation	-	गुरुत्वाकर्षण
Humanities	-	मानविकी
Liberalism	-	उदारतावाद
Odd number	-	विषम संख्या
Pattern	-	प्रतिमान
Percent	-	प्रतिशत
Philosophy	-	दर्शनशास्त्र
Physics	-	भौतिकी
Political Science	-	राजनीति-विज्ञान
Radiation	-	विकिरण
Ratio	-	अनुपात
Satellite	-	उपग्रह
Sociology	-	समाज-विज्ञान
Statistics	-	सांख्यिकी
Trade Union	-	श्रमिक-संघ
Ultraviolet	-	पराबैंगनी
Vaccination	-	टीकाकरण
Virus	-	विषाणु
Zoology	-	जंतुविज्ञान

मार्च 13

आज मेरी ज़िंदगी का सुनहरा दिन है। आज रिज़र्व बैंक की हैदराबाद शाखा में मुझे राजभाषा अधिकारी के पद पर नियुक्ति मिली है। मुझे उन सब गुरुवरों की याद आ रही है जिन्होंने मुझे हिंदी सिखाई। कल श्रीवास्तव जी को खत लिखूँगी ज़रूर... उन्होंने मुझे राह दिखाई थी....

अनुवर्ती कार्य

- रिज़र्व बैंक की हैदराबाद शाखा में राजभाषा अधिकारी के पद पर नियुक्ति की खुशखबरी देते हुए श्रीवास्तव के नाम वीणा चिट्ठी लिखती है। वह चिट्ठी तैयार करें।

- **सही मिलान करें :-**

Geography	मानविकी
Energy	समीकरण
Virus	प्रमाण पत्र
Equation	विषाणु
Certificate	भूगोल
Humanities	ऊर्जा

प्रसंगार्थ

उम्मीदवार	-	candidate
दस्तावेज़	-	document
भुगतान	-	payment
संविधान	-	constitution
संघ	-	union
अंक	-	number

राष्ट्र की पहचान है जो, भाषाओं में महान है जो
जो सरल सहज समझी जाए, उस हिंदी का सम्मान करें।